SHRI GADDAM SAMMAIAH

Shri Gaddam Sammaiah is known for his outstanding contributions to the field of Yakshagana, a traditional folk theater art form of Telangana, which is known for its elaborate costumes, music, dance, and vibrant storytelling.

2. Born on 1st January, 1956, Shri Sammaiah inherited the art of Chindu Yakshaganam from his parents, who were outstanding in this ancient folk art form. He chose it as a profession. He diversified his artistic talent over years evolving as an iconic artist, writer, singer and director. From the age of 14, he played the roles of Lohitasya, Prahlada, Siriyala, Balawadhi Krishna from Mahabharatha, Ramayana and from the age of 25 played the role of Satyaharishchandra, Kichaka, Kama, Sri Krishna, Arjuna and Ravana Brahma. He actively engages in publishing Government Schemes through Yakshaganam.

3. Shri Sammaiah presented a string of 19240 shows across the state on various Government welfare and Social Responsibility programmes such as prohibition, total literacy, environmental protection, family planning, AIDS Awareness, eradication of social evils and represented District Information and Public Relation Department, from 1985- 2011. He was recognized as “B' Grade artist by AIR, Hyderabad in 1991 and gave 50 Yakshaganam shows from AIR, Warangal and 4150 shows as part of Government Welfare Programmes organized by Public Relation Department (DPRO) as “A” Grade Artist. He founded Chindu Yaksha Kalakarula Sangham.

4. Shri Sammaiah helped 850 poor folk artists to earn livelihood and recognition by organizing state level programmes. He trained 85 young Chindu Artists Groups. Each group consists of 15 members thus benefiting a total of 1275 members though this art. He also established Gaddam Sammaiah Yuva Kala Skethram and Chindu Yaksha Gana Kala Karula Sangam in the year 1991 and still continues to teach this traditional folk art form.

5. Shri Sammaiah has received many appreciations and honours from Government and NGO Associations and organizations, appreciations from Akashavani and Doordarshan, award in Tradition cultural fare (1990), appreciation in State Youth Cultural Programme (1994), Telugu University Prathibha Puraskaram (1995), appreciation from Aakashavani (1997), Andhra Pradesh State Rangasthala Puraskar (2007), Kala Ratna Award from Andhra Pradesh (2011), awards by Telangana Cultural Art Society (2013), Dhatri Kalanjali Society (2014), Chindu Yakshagana Mahostavam (2015), Karimnagar Folk Arts Academy (2015), Kala Vedika Golden Jubilee (2016).

श्री गद्दाम सम्मैय्या

श्री गद्दाम सम्मैय्या तेलंगाना की एक पारंपरिक लोक रंगमंच कला, यक्षगान के क्षेत्र में अपने उत्कृष्ट योगदान के लिए सुप्रसिद्ध हैं, जिसे सुपरिष्कृत वेशभूषा, संगीत, नृत्य और जीवंत कथाकारिता के लिए जाना जाता है।

2. 01 जनवरी, 1956 को जन्मे, श्री सम्मैय्या को चिंदु यक्षगानम की कला अपने माता–पिता से विरासत में मिली, जो इस प्राचीन लोक कला के उत्कृष्ट कलाकार थे। उन्होंने इसे अपना पेशा बनाया। अपनी कलात्मक प्रतिभा में विविधता लाकर वह एक प्रतिष्ठित कलाकार, लेखक, गायक और निदेशक बने। 14 वर्ष की आयु से उन्होंने महाभारत, रामायण के लोहितास्य, प्रहलाद, सिरियाला, बलवाधी कृष्ण की भूमिकाएं निभाई और 25 वर्ष की आयु से सत्यहरिश्चंद्र, कीचक, काम, श्री कृष्ण, अर्जुना और रावण ब्रह्मा की भूमिकाएं निभाई। वे यक्षगानम के माध्यम से सरकारी योजनाओं का भी सक्रिय रूप से प्रचार करते हैं।

3. श्री सम्मैय्या ने मद्य निषेध, समग्र साक्षरता, पर्यावरण संरक्षण, परिवार नियोजन, एड्स जागरूकता, सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन जैसे विभिन्न सरकारी कल्याण और सामाजिक उत्तरदायित्व कार्यक्रमों पर राज्य भर में 19240 शो की एक श्रृंखला प्रस्तुत की, और 1985 से 2011 तक जिला सूचना और जनसंपर्क विभाग का प्रतिनिधित्व किया। 1991 में आकाशवाणी, हैदराबाद द्वारा उन्हें "बी" श्रेणी कलाकार के रूप में मान्यता दी गई थी। उन्होंने आकाशवाणी, वारंगल से 50 यक्षगानम शो प्रस्तुत किए और जनसंपर्क विभाग (डीपीआरओ) द्वारा आयोजित सरकारी कल्याण कार्यक्रमों के हिस्से के रूप में "ए" श्रेणी कलाकार के रूप में 4150 शो किए। उन्होंने चिंदु यक्ष कला करुला संघम की स्थापना की।

4. श्री सम्मैय्या ने राज्य स्तरीय कार्यक्रमों का आयोजन करके 850 गरीब लोक कलाकारों को आजीविका कमाने और पहचान अर्जित करने में मदद की। उन्होंने युवा चिंदु कलाकारों के 85 समूहों को प्रशिक्षित किया। प्रत्येक समूह में 15 सदस्य होते हैं और इस प्रकार, उन्होंने इस कला के माध्यम से कुल 1275 कलाकारों को लाभान्वित किया है। उन्होंने वर्ष 1991 में गद्दम समैया युवा कला क्षेत्रम और चिंदु यक्ष गान कला करुला संगम की भी स्थापना की और अभी भी इस पारंपरिक लोक कला को सिखा रहे हैं।

5. श्री सम्मैय्या को सरकार और एनजीओ एसोसिएशनों एवं संगठनों से कई सराहना–पत्र और सम्मान प्राप्त हुए हैं, जिनमें आकाशवाणी और दूरदर्शन से सराहना–पत्र, परंपरा संस्कृति मेला में पुरस्कार (1990), राज्य युवा सांस्कृतिक कार्यक्रम में सराहना (1994), तेलुगु विश्वविद्यालय प्रतिभा पुरस्कारम (1995), आकाशवाणी से सराहना (1997), आंध्र प्रदेश राज्य रंगस्थल पुरस्कार (2007), आंध्र प्रदेश से कला रत्न पुरस्कार (2011), तेलंगाना सांस्कृतिक कला सोसाइटी (2013), धात्री कलांजलि सोसायटी (2014), चिंदु यक्षगान महोत्सवम (2015), करीमनगर लोक कला अकादमी (2015), कला वेदिका गोल्डन जुबली द्वारा पुरस्कार (2016) शामिल हैं।